Neeb Karori Baba ji Ki Vinay Chalisa

"मैं हूँ बुद्धि मलीन अति, श्रद्धा भक्ति विहीन ॥
करूं विनय कछु आपकी, हौं सब ही विधि दीन ॥
जै जै नीब करौरी बाबा द्य कृपा करहु आवै सदभावा ॥

कैसे मैं तव स्तुति बखानूँ द्य नाम ग्राम कछु मैं नहिं जानूँ ॥
जापै कृपा दृष्टि तुम करहु द्य रोग शोक दु:ख दारिद हरहु ॥

तुम्हरौ रूप लोग नहिं जानै ᵖ जापै कृपा करहु सोई भानैं ॥
करि दै अरपन सब तन मन धनप्पावै सुक्ख अलौकिक सोई जन ॥

दरस परस प्रभु जो तव करई ᵖ सुख सम्पति तिनके घर भरई ॥
जै जै संत भक्त सुखदायक ᵖ रिद्धि सिद्धि सब सम्पति दायक द्यद्य

तुम ही विष्णु राम श्री कृष्णाᵖ विचरत पूर्ण कारन हित तृष्णा ॥
जै जै जै जै श्री भगवंता ᵖ तुम हो साक्षात भगवंता ॥

कही विभीषण ने जो बानी ᵖ परम सत्य करि अब मैं मानी ॥
बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता प्सो करि कृपा करहिं दु:ख अंत ॥

सोई भरोस मेरे उर आयो ᵖ जा दिन प्रभु दर्शन मैं पायो ॥
जो सुमिरै तुमको उर माहीं ᵖ ताकी विपति नष्ट हवे जाहीं ॥

जै जै जै गुरुदेव हमारे ᵖ सबहि भाँति हम भये तिहारे ॥
हम पर कृपा शीघ्र अब करहूं ᵖ परम शांति दे दु:ख सब हरहूं ॥

रोग शोक दु:ख सब मिट जावे ᵖ जपै राम रामहि को ध्यावें ॥
जा विधि होइ परम कल्याणा ᵖ सोई सोई आप देहु वारदाना ॥

सबहि भाँति हरि ही को पूजें ᵖ राग द्वेष द्वंदन सो जूझें ॥
करैं सदा संतन की सेवा ᵖ तुम सब विधि सब लायक देवा ॥

सब कछु दै हमको निस्तारो । भव सागर से पार उतारो ॥
मैं प्रभु शरण तिहारी आयो । सब पुण्यं को फल है पायो ॥

जै जै जै गुरुदेव तुम्हारी । बार बार जाऊं बलिहारी ॥
सर्वत्र सदा घर घर की जानो । रूखो सूखो ही नित खानों ॥

भेष वस्त्र हैं सादा ऐसे । जानें नहिं कोउ साधू जैसे ॥
ऐसी है प्रभु रहनि तुम्हारी । वाणी कहौ रहस्यमय भारी ॥

नास्तिक हूँ आस्तिक हवे जावें । जब स्वामी चेटक दिखलावें ॥
सब ही धर्मनि के अनुयायी । तुम्हें मनावें शीश झुकाई ॥

नहिं कोउ स्वारथ नहिं कोउ इच्छा।वितरण कर देउ भक्तन भिक्षा॥
केहि विधि प्रभु मैं तुम्हें मनाऊँ । जासों कृपा-प्रसाद तब पाऊँ ॥

साधु सुजन के तुम रखवारे । भक्तन के हौ सदा सहारे ॥
दुष्टऊ शरण आनि जब परई । पूरण इच्छा उनकी करई ॥

यह संतन करि सहज सुभाऊ । सुनि आश्चर्य करइ जनि काऊ ॥
ऐसी करहु आप अब दाया । निर्मल होइ जाइ मन और काया ॥

धर्म कर्म में रुचि होय जावै । जो जन नित तव स्तुति गावै ॥
आवें सद्गुन तापे भारी । सुख सम्पति सोई पावे सारी ॥

होइ तासु सब पूरन कामा प्अंत समय पावै विश्रामा ॥
चारि पदारथ है जग माहीं । तव प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥

त्राहि त्राहि मैं शरण तिहारी प्हरहु सकल मम विपदा भारी पप
धन्य धन्य बड़ भाग्य हमारो । पावैं दरस परस तव न्यारो ॥

कर्महीन अरु बुद्धि विहीना। तव प्रसाद कछु वर्णन कीना ॥
श्रद्धा के ये पुष्प कछु, चरनन धरे सम्हार ॥
कृपा-सिन्धु गुरुदेव तुम, करि लीजै स्वीकार ॥

InstaAstro